सिर्फ़ उनके लिए

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

मैं अभी-अभी सेवानिवृत्त हुआ था। जिलेट इटालिया में बिक्री के चालीस साल। अपनी उम्र के बहुत-से आदमियों की तरह मेरे पास विकल्प कम थे, पर एक बात पक्की थी: जो समय कभी अनंत लगता था, वह किसी जादू से नाप-तौल के दायरे में आ गया था। वह एक मंज़िल की ओर इशारा कर रहा था — एक ऐसी मंज़िल, जो मेरे लिए एक नई शुरुआत होती।

ज़िंदगी में मेरे ऐब गिने-चुने ही रहे। यह उस परवरिश की देन थी जो उसूलों और फ़र्ज़ पर टिकी थी — न कि ज़रूरतों और ख़्वाहिशों पर। उस दिन मैं अपनी किताबें बग़ल में दबाए सड़क पर टहल रहा था। मेरा सच्चा जुनून। जिलेटनैरेटिव ने मुझे अपने वश में कर लिया था — और इसके लिए किसी सस्पेंडर की ज़रूरत नहीं पड़ी।

फिर मुझे आवाज़ें सुनाई दीं। औरतों की आवाज़ें। और मेरे पीछे: औरतों का एक झुंड। और क्या औरतें। फ़िल्मों वाली औरतों जैसी ख़ूबसूरत और दिलकश — बिना एक भी कमी के। वे तेज़ी से चल रही थीं, अपने पीछे फ़ॉर्मूला वन कारों जैसी लकीर छोड़ती हुई — वही लकीर जिसके पीछे दूसरे ड्राइवर लगे रहते हैं, कोई फ़ायदा चुरा लेने की कोशिश में। मैं उनके पीछे हो लिया।

मेरे पास कोई टिकट नहीं था। कोई न्योता नहीं। कोई पैसा नहीं। मैंने हिम्मत नहीं हारी। हम जिलेट के आदमी एक काम बख़ूबी जानते हैं — हमेशा वही एक काम: समाधान ढूँढना। समस्याएँ कभी नहीं।

मैं उनमें से एक के पास गया और उसे एक किताब थमा दी। वह मुस्कुराई। मेरा नाम पूछा। और ख़ामोशी से मेरा हाथ थामकर मुझे थिएटर के भीतर ले गई — एक भी शब्द कहे बिना।

औरतों का जादू। औरतों की ताक़त। मुझे किसी सम्मेलन की उम्मीद थी। किसी छोटे-से कार्यक्रम की। पत्रकारों के साथ किसी इंटरव्यू की। जिसकी मुझे कभी उम्मीद नहीं थी, वह था एक नए शैक्षिक अभियान का शुभारंभ, जिसका शीर्षक था:

ऐसा नहीं करते।

ये ठीक वही शब्द थे जो दुनिया की हर औरत इस्तेमाल करती है — पहले बच्चों पर, फिर मर्दों पर।

यह लगभग एक घंटे तक चला। बस इतना ही समय — औसतन उतनी ही देर जितनी एक आदमी को किसी विचार को स्वीकार करने, फिर उस पर सोच-विचार करने, और तभी जाकर उसे बदल पाने के लिए चाहिए होती है।

और यह सब सच था। हम एक औरत से जन्म लेते हैं। हम रोते हुए इस दुनिया में आते हैं और रोते हुए ही इससे विदा होते हैं। हम अपनी सारी ज़िंदगी टेक लगाने के लिए किसी औरत का कंधा ढूँढते रहते हैं। और आख़िर में हम हमेशा ख़ुद को अकेला ही पाते हैं — कानों में गूँजते एक ही मंत्र के साथ:

ऐसा नहीं करते।

नांदो, लेखक

 © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।